NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत के ग्रामीण मॉडल: विकास कूटनीति का निर्माण

www.nextias.com

भारत के ग्रामीण मॉडल: विकास कूटनीति का निर्माण

संदर्भ

- भारत की ग्रामीण विकास यात्रा कल्याण-उन्मुख योजनाओं से सामुदायिक-आधारित संस्थागत मॉडलों की ओर संरचनात्मक बदलाव से गुज़री है। *DAY-NRLM* जैसी प्रमुख योजनाओं ने भारत में ग्रामीण आजीविका को रूपांतरित किया है और विशेषकर ग्लोबल साउथ में भारत की विकास कूटनीति को प्रभावित कर रही हैं।

ग्रामीण विकास की आवश्यकता

- ग्रामीण विकास भारत की राष्ट्रीय प्राथमिकता है क्योंकि लगभग दो-तिहाई जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इसमें शामिल हैं:
  - गरीबी उन्मूलन
  - रोजगार सृजन
  - ग्रामीण–शहरी असमानताओं को कम करना
  - कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा
  - अवसंरचना विकास
  - सामाजिक न्याय
  - महिला सशक्तिकरण
  - प्रवासन और शहरी दबाव को कम करना
  - स्थानीय शासन को सुदृढ़ करना
  - सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति

DAY-NRLM के बारे में

- यह ग्रामीण विकास मंत्रालय का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबी को कम करना है। यह मुख्यतः महिला-नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से स्वरोज़गार और सतत आजीविका को बढ़ावा देता है।

भारत का ग्रामीण विकास मॉडल

- **सामुदायिक-केंद्रित संस्थागत संरचना:** NRLM तीन-स्तरीय ढाँचे के माध्यम से लागू होता है — SHGs, ग्राम संगठन (VOs), और क्लस्टर-स्तरीय महासंघ (CLFs)।
  - NRLM ने 90 लाख से अधिक SHGs को संगठित किया है, जो लगभग 10 करोड़ परिवारों को कवर करते हैं।
  - यह सहभागी शासन, जवाबदेही और स्थिरता सुनिश्चित करता है।
- **महिला-नेतृत्व वाला विकास:** अधिकांश SHG सदस्य महिलाएँ हैं; 5 करोड़ से अधिक महिलाएँ औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जुड़ी हैं; बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट सखियों का उदय हुआ है।
  - NRLM ने महिलाओं की वित्तीय समावेशन, अधिकारिता और श्रम बल में भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है।
- **वित्तीय समावेशन और आजीविका विविधीकरण:** सुदृढ़ SHG–बैंक लिंक कार्यक्रम; लगभग ₹12 लाख करोड़ का ऋण पहुँच; सूक्ष्म उद्यमों, कौशल विकास और कृषि-आधारित आजीविका को बढ़ावा।
  - इससे आय वृद्धि, बचत संचयन और गरीबी में कमी हुई है।

- **लागत-प्रभावी और विस्तार योग्य मॉडल:** पूँजी-गहन मॉडलों के विपरीत, NRLM सामाजिक पूँजी (विश्वास-आधारित ऋण), सामुदायिक कार्यकर्ताओं और विकेंद्रीकृत शासन पर आधारित है।
  - यह संसाधन-सीमित परिस्थितियों में अत्यधिक पुनरुत्पादनीय है।

मुख्य परिणाम: भारत का ग्रामीण रूपांतरण

- NRLM 700+ ज़िलों में संचालित है; बड़े पैमाने पर ऋण पहुँच और उद्यम सृजन को सुगम बनाया; और बुनियादी स्तर पर शासन संस्थाओं को सुदृढ़ किया।
- इसने गरीबी की तीव्रता को कम किया, आजीविका सुरक्षा में सुधार किया और सामाजिक पूँजी एवं सामूहिक कार्रवाई को बढ़ाया।

भारत का मॉडल: घरेलू सफलता से वैश्विक प्रभाव तक

- **SHG मॉडल का निर्यात:** NRLM की संरचना इथियोपिया, केन्या, तंज़ानिया, रवांडा और मलावी जैसे देशों द्वारा अध्ययन की जा रही है।
  - ये देश महिला-नेतृत्व वाले समूहों, सूक्ष्म वित्त-आधारित आजीविका और विकेंद्रीकृत संस्थागत ढाँचे में रुचि रखते हैं।
- **विकास प्रतिमान में बदलाव:** पारंपरिक रूप से विकास मॉडल पश्चिमी ढाँचों पर आधारित शीर्ष-से-नीचे दृष्टिकोण थे।
  - भारत का दृष्टिकोण दक्षिण-दक्षिण सहयोग, सहकर्मी शिक्षण और संदर्भानुकूल नवाचार का प्रतिनिधित्व करता है।
  - NRLM दर्शाता है कि स्थानीय रूप से विकसित समाधान वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक हो सकते हैं।

भारत की विकास कूटनीति

- **सहायता से ज्ञान-साझाकरण तक:** भारत संस्थागत ढाँचे (SHGs), क्षमता-निर्माण मॉडल और शासन प्रथाओं का निर्यात कर रहा है।
  - यह वित्तीय सहायता से संस्थागत हस्तांतरण की ओर बदलाव को दर्शाता है।
- **दीर्घकालिक साझेदारी निर्माण:** NRLM प्रशिक्षण कार्यक्रमों, अध्ययन यात्राओं और तकनीकी सहयोग को सक्षम बनाता है।
  - इस प्रकार की भागीदारी सरकारों और समुदायों के बीच स्थायी संबंध स्थापित करती है।
- **भारत के लिए रणनीतिक लाभ:** यह सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है, ग्लोबल साउथ नेतृत्व को सुदृढ़ करता है और डिजिटल शासन, वित्तीय समावेशन तथा ग्रामीण उद्यमिता में नए अवसर खोलता है।

वैश्विक स्तर पर मॉडल का विस्तार करने में चुनौतियाँ

- **संदर्भगत भिन्नताएँ:** विभिन्न देशों में सामाजिक संरचनाओं (जैसे जाति बनाम जनजातीय गतिशीलता), लैंगिक मानदंडों और सामुदायिक एकजुटता में अंतर।
  - SHG मॉडल विश्वास, सामाजिक पूँजी और सामूहिक व्यवहार पर अत्यधिक निर्भर है, जो हर जगह समान रूप से उपस्थित नहीं हो सकता।
- **कमज़ोर संस्थागत क्षमता:** NRLM की सफलता सुदृढ़ राज्य तंत्र, विकेंद्रीकृत शासन (पंचायती राज संस्थाएँ) और समर्पित मिशन संरचनाओं पर निर्भर है।
  - कई विकासशील देशों में प्रशासनिक गहराई और स्थानीय शासन प्रणालियों का अभाव है।

- **वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र की सीमाएँ:** भारत में परिपक्व बैंकिंग नेटवर्क, SHG–बैंक लिंक प्रणाली और वित्तीय समावेशन का पारिस्थितिकी तंत्र है।
- **विस्तार बनाम प्रभावशीलता का संतुलन:** तीव्र विस्तार समूह की एकजुटता, ऋण अनुशासन और कार्यक्रम की गुणवत्ता को कमजोर कर सकता है।
- **क्षमता निर्माण और मानव संसाधन:** NRLM सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों (CRPs) और प्रशिक्षित जमीनी कार्यकर्ताओं पर निर्भर है।
- **बाज़ार संपर्क और आर्थिक एकीकरण:** SHGs को बाज़ारों, मूल्य श्रृंखलाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्म तक पहुँच की आवश्यकता होती है।
- **डिजिटल और तकनीकी अंतराल:** डिजिटल भुगतान, MIS प्रणालियों और वित्तीय तकनीक पर बढ़ती निर्भरता।
- **सततता संबंधी चिंताएँ:** दीर्घकालिक स्थिरता आर्थिक व्यवहार्यता और संस्थागत परिपक्वता पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष एवं आगे की राह

- भारत के ग्रामीण विकास मॉडल, विशेषकर NRLM, कल्याण-आधारित योजनाओं से संस्थान-आधारित सशक्तिकरण की ओर एक प्रतिमान बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- अफ्रीका और अन्य विकासशील क्षेत्रों में इनकी बढ़ती स्वीकृति भारत को विकास व्यवहार में मानक-निर्धारक के रूप में उभरते हुए दर्शाती है।
- भारत को एक **वैश्विक ग्रामीण आजीविका ज्ञान मंच** स्थापित करना चाहिए, क्षमता-निर्माण और फैलोशिप कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिए, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना एकीकरण को बढ़ावा देना चाहिए, मूल्य श्रृंखलाओं एवं बाज़ार पहुँच को सुदृढ़ करना चाहिए, तथा दक्षिण-दक्षिण सहयोग के अंतर्गत अफ्रीका में पायलट परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- विचारों, संस्थानों और वास्तविक अनुभवों के निर्यात के माध्यम से भारत 21वीं सदी में विकास कूटनीति को पुनर्परिभाषित कर रहा है।

स्रोत: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न
प्रश्न: चर्चा कीजिए कि भारत का ग्रामीण विकास अनुभव ग्लोबल साउथ में विकास कूटनीति के नए प्रतिमान के निर्माण में किस प्रकार योगदान दे सकता है।